M.L.S. College Sarisab-Pahi, Madhubani
(L.N.M.U., Darbhanga)
Department of Philosophy
Dr. SARITA KUSHWAHA

B.A. I[st] (Hon+Sub+Gen)
Indian Philosophy
न्याय दर्शन (10)

न्याय दर्शन [10]

शब्द प्रमाण

न्यायदर्शन में चार प्रमाण स्वीकार किये जाते हैं जिसमें शब्द प्रमाण एक प्रमाण है। चार्वाक; बौद्ध एवं वैशेषिक के अलावा सभी भारतीय दर्शन 'शब्द' को एक प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं। चार्वाक ने शब्द को अनुमान पर आधारित माना है अतः चार्वाक अनुमान के साथ-साथ शब्द प्रमाण का भी खंडन कर देते हैं। व्यवहारिक दृष्टिकोण से शब्द को प्रमाण न मानने पर हमारा दैनिक जीवन अत्यंत कठिन हो जाता है।

शब्द क्या है?

शब्द का अर्थ = आप्त पुरुषों के वचन
जो व्यक्ति सत्य को प्राप्त हैं वे ही आप्त पुरुष कहलाते हैं।
अर्थात यथार्थवक्ता एवं दयालु व्यक्तियों के वचन ही शब्द हैं।
जैसे- बुद्ध, महावीर, गुरु आदि आप्त पुरुष हैं।

आप्त + उपदेशः आप्तोपदेशः शब्दः

• शब्द विश्वसनीय व्यक्तियों के वचन हैं। वही व्यक्ति विश्वसनीय होता है, जिसकी बातें सत्य सिद्ध होती हैं। व्यक्ति की विश्वसनीयता अनुमान पर आधारित होती है। (चार्वाक)

शब्द प्रमाण के प्रकार–

शब्द प्रमाण दो प्रकार से विभाजित किया जाता है-
1. शब्द ज्ञान के स्रोत के आधार पर-
1. लौकिक शब्द   2. वैदिक शब्द

Scanned with CamScanner

२. शब्द को ज्ञान के विषय के आधार पर भी दो भागों मे विभाजित किया जाता है:-

1. दृष्ट 2. अदृष्ट

1. **लौकिक शब्द :-** आप्त पुरुष या विश्वसनीय व्यक्तियों के वचनों को लौकिक शब्द कहते है। इनकी प्रमाणिकता/सत्यता विश्वसनीयता पर आधारित होती है।

लौकिक का अर्थ = इस लोक का

२. **वैदिक शब्द :-** वेदों में संकलित वचन अथवा वाक्यों को ईश्वरीय वचन की संज्ञा दी जाती है, ये ही वैदिक शब्द कहलाता है। वेदों को अपौरुषेय की संज्ञा दी जाती है। अर्थात् वेदों की रचना मनुष्यों के द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर द्वारा की गई है।

वेदों के वचन ईश्वरीय वचन है इसलिए इनकी प्रमाणिकता विश्वसनीय है। अर्थात् सत्य है।

ज्ञान के विषय के आधार पर शब्द के प्रकार निम्न हैं:-

1. **दृष्ट शब्द ज्ञान:** ऐसे शब्दों को दृष्ट शब्द ज्ञान कहते है जिनके विषय का प्रत्यक्ष किया जा सके।
जैसे:- आज स्कूल बंद है।

२. **अदृष्ट शब्द ज्ञान:** जिन शब्दों के विषय का प्रत्यक्ष नहीं किया जा सकता है उसे अदृष्ट शब्द ज्ञान कहते है।
जैसे- स्वर्ग बहुत सुंदर है।

दृष्ट = जिसे देखा जा सके।	अदृष्ट = जिसे देखा न जा सके।

Scanned with CamScanner

वाक्य

शब्दों या पदों के समूह को वाक्य कहते हैं। अर्थपूर्ण शब्दों का समूह, वाक्यों की रचना करते हैं। यह वाक्य सार्थक तथा निरर्थक दोनों ही प्रकार के हो सकते हैं। परन्तु केवल सार्थक वाक्य द्वारा ही शाब्द ज्ञान हो सकता है। वाक्यों की सार्थकता के लिए चार शर्तों का होना अनिवार्य है। वह है -

① आकांक्षा, ② योग्यता, ③ सन्निधि, ④ तात्पर्य

1. **आकांक्षा :-** वाक्य की सार्थकता के लिए आवश्यक है कि वाक्य में जो पद या शब्दों का प्रयोग किया गया है वह परस्पर एक-दूसरे से संबंधित हो। प्रत्येक वाक्य के प्रत्येक शब्द या पद को वाक्य के अन्य शब्द या पद से अपेक्षा रहती है। इस अपेक्षा को ही आकांक्षा कहते हैं।
जैसे- यदि हम कहे 'लाओ' तो यहाँ लाओ शब्द को किसी अन्य शब्द की अपेक्षा है कि क्या लाओ। तब अन्य शब्द 'पानी' जोड़ दे तो वाक्य-'पानी लाओ'। यह एक सार्थक वाक्य हुआ।

2. **योग्यता :-** पदों की 'योग्यता' वाक्य की दूसरी आवश्यकता है। वाक्य के पदों या शब्दों के माध्यम से हमें जिन वस्तुओं का बोध होता है यदि उनमें कोई विरोध उत्पन्न न हो तो इस विरोध के अभाव को ही योग्यता कहा जाता है। जैसे- आग से सींचो। इस वाक्य में पदों में योग्यता का अभाव है क्योंकि 'आग' और 'सींचना' दोनों ही शब्द या पद एक दूसरे के विरोधी हैं।

3. **सान्निधि :-** वाक्य की तीसरी आवश्यकता को हम 'सान्निधि' या 'आसत्ति' कहते हैं। वाक्य के पदों या शब्दों का एक दूसरे से समय और स्थान की निकटता या सन्निकटता ही

Scanned with CamScanner

सान्निधि कहलाती है। किसी वाक्य की सार्थकता तभी होती है जब उनके पदों या शब्दों में समय और स्थान की दृष्टि से निकटता हो अन्यथा उनके बीच समय का जो अन्तर होगा तो वाक्य ही नहीं बनेगा। जैसे- 'एक - किताब - लाओ'। उपर्युक्त उदाहरण में तीनों शब्दों के बीच दूरी है जिसके कारण वे अलग-अलग पढ़े जायेंगे जिससे वह वाक्य की श्रेणी में नहीं आता।

4. **तात्पर्य :-** कोई वाक्य जिस परिस्थिति या प्रसंग के लिए होता है उसका अर्थ उसी परिस्थिति या प्रसंग के अनुरूप होना ही तात्पर्य कहलाता है। अर्थात् वाक्य को समझने के लिए हमें वक्ता या लेखक के अभिप्राय को जानना होगा। जैसे:- 'सैंधव लाओ'। यहाँ पर 'सैंधव' शब्द के दो अर्थ हैं पहला, 'सैंधव नमक' और दूसरा 'सिंधु देश का घोड़ा'। अतः हमें वाक्य के अर्थ को जानने के लिए उसके तात्पर्य पर विचार करना होगा।

शब्द की वृत्तियाँ

किसी शब्द के अर्थ को व्यक्त करने की शक्ति को ही वृत्ति कहते हैं। शक्ति से तात्पर्य यह है कि एक शब्द विशेष का एक अर्थ विशेष होता है।

न्याय के अनुसार शब्द में दो प्रकार की वृत्तियाँ पायी जाती हैं:-

1. अभिधा
2. लक्षणा

1. **अभिधा :-** शब्द का मुख्य अर्थ बताने वाली वृत्ति को 'अभिधा' कहते हैं। हमें अभिधा द्वारा शब्द और उसके अर्थ के मध्य अलौकिक संबंध का बोध होता है। अभिधा से हमें शब्द के मुख्य अर्थ का बोध होता है।
जैसे:- काग काला पक्षी है।

2. **लक्षणा :-** शब्द के गौण अर्थ का बोध हमें लक्षणा द्वारा होता है। शब्द के मुख्य अर्थ में बाधा होने पर जिस

Scanned with CamScanner

शक्ति द्वारा शब्द के मुख्य अर्थ से भिन्न अर्थ की प्राप्ति होती है उसी को लक्षणा शक्ति कहते हैं।
जैसेः- राम गधा है।

नव्य नैयायिकों ने लक्षणा के 3 प्रकारों की चर्चा की -
1. जहत लक्षणा -(छोड़ देना) 2. अजहत लक्षणा-(नहीं छोड़ना)
3. जहत-अजहत लक्षणा-(भाग-त्याग लक्षणा)

1. जहत लक्षणाः- इसमें वाक्य के मुख्य अर्थ को छोड़ दिया जाता है।
जैसेः- वह गंगा में निवास करता है। (तट को छोड़ दिया)

2. अजहत लक्षणा- इसमें वाक्य के मुख्य अर्थ को छोड़ा नहीं जाता बल्कि उसे और विस्तृत किया जाता है।

3. जहत-अजहत लक्षणा- इसमें अंशतः मुख्य अर्थ बना भी रहता है अंशतः छूट भी जाता है।

Sweta Kushwaha
20/04/2020

Scanned with CamScanner